प्याऊ-एक सफल लड़ाई

सीमा श्रीवास्तव

उस दिन दक्षिणपुरी बी-ब्लाक में काफ़ी चहल-पहल थी। प्याऊ को खुबसूरत ढंग से सजाया गया था। आज इस प्याऊ का उद्घाटन मात्र ही नहीं है। इसके पीछे औरतों का एक लम्बा संघर्ष और फतह की कहानी है जो आज से दो महीने पूर्व आरम्भ हुई थी।

दक्षिणपुरी बी-बलॉक मार्केट में कुछ ज़मीन पर पप्पू नाम के एक बिजली मैकेनिक ने कब्जा किया हुआ था और अवैध रूप से अपनी दुकान बना रखी थी। उसने कुछ ज़मीन जूस वाले को 2,500 रुपये माहवार पर किराए पर दे रखी थी। वहीं पर एम.सी.डी. के पानी का नल भी है। इससे वहां के करीब सौ घर पानी भरते हैं। पप्पू ने सोचा कि इस नल को तोड़कर लॉटरी का एक काउंटर बनाए। इससे उसे 10 हजार रुपये तक की आमदनी हो सकती थी। अपने स्वार्थ के लिए उसने नल तोड़ दिया। 'एकल औरत महिला समूह" पिछले 12 वर्षों से दक्षिणपुरी सुभाष कैम्प में कार्यरत है। इसने, इसका विरोध किया और उसी जगह प्याऊ बनाने का निश्चय किया। इस अभियान में युवा संघ व महिला संघ दोनों ने एकजुट होकर काम किया। इस लम्बे दौर में इन्हें कई खतरों का सामना करना पड़ा। पप्पू बनिए ने शराब पीकर गालियां बकीं। उसने हर वो हथकण्डे अपनाए जिससे उनका प्याऊ अभियान धूमिल हो जाए। उसने प्याऊ तोड़ने की धमकियां दी, लेकिन तमाम कोशिशें नाकाम हुई। शान्ति, एकल महिला समूह और युवामंच दोनों ने मिलकर, एक जुट होकर प्याऊ की नींव डाल ही दी। दो महीने की भागदौड़ में इन्होंने इस जगह का रजिस्ट्रेशन भी करवा लिया। युवा संघ ने सुझाव दिया कि इस प्याऊ पर भगवान् की फोटो होनी चाहिए, तुरन्त महिला संघ से आवाज आई तब तो हर धर्म की फोटो लगवानी चाहिए। इसका जवाब किसी के पास नहीं था। किसी तरह बात सुलझी कि प्याऊ पर युवा संघ और एकल औरत महिला समूह दोनों नाम दिए जाएं। सबकी राय पर यह नाम लिख दिए गए।

यह जमीन मार्किट में थी और यह सारा इलाका जिस प्रधान के अधीन आता है वह दोहरी नीति चला रहा था। उसने भी प्याऊ का विरोध किया, लेकिन युवाओं और महिलाओं की ताकत देखकर हामी भरने में ही भलाई समझी।

संघ में भी युवाओं एवं महिलाओं के बीच प्रधान को बुलवाया गया और उससे बात की गई यहां प्रधान समूह पर इल्ज़ाम लगाते हुए कहने लगा' 'आप लोग राजनीति खेलते हो। इस प्याऊ का काम तो पूरी बस्ती ने किया है, फिर समूह का नाम क्यों?" परन्तु समूह यह अच्छी तरह जानता था कि 'नाम' का तो बहाना था। वास्तविक लड़ाई महिलाओं की एकता और सफलता से उत्पन्न खीझ थी।

खैर, इतना बड़ा समूह व उसकी एकता के सामने उन्हें झुकना पड़ा और 5 जुलाई 1997 को महिलाओं द्वारा बनाए प्याऊ का उद्घाटन हुआ। करीब

200 लोग इकट्ठा हुए। गाने बजाने का माहौल था। महिलाएं खुश थीं कि उनके संघर्ष को एक पहचान मिली है।

बात सिर्फ प्याऊ की नहीं थी। सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा करना, शराब और जुए का अड्डा खोलना- इन सबका विरोध कोई नहीं कर रहा था। युवा शक्ति के साथ महिला संघ ने यह कार्य कर दिखाया। उद्घाटन के दौरान औरतों की घोषणा साफ थी। जो इस प्याऊ को तुड़वाने की बात करेगा वह सफल नहीं हो सकता। उसके जमानती भी पैदा होने नहीं दिए जाएंगे। जूस की दुकान के पास शराब पीने वाले को पुलिस के हवाले किया जाएगा और उसकी दुकान हटाने का काम हम करेंगे। जो इस प्याऊ पर नहायेगा उसे 51 रुपये दण्ड देना होगा। संघ द्वारा तय सजा भुगतनी होगी। इससे लोगों में काफी हिम्मत आई। जो इस प्याऊ के विरोध में थे उनकी तमाम कोशिशें नाकाम हुईं। महिलाओं की जीत हुई। वहां लॉटरी काउन्टर नहीं खुला। प्याऊ बना जिस पर लिखा नाम महिलाओं के संघर्ष और जीत का सबूत है। □